# "टुकड़ा – टुकड़ा जीवन" दलित आत्मकथा के संदर्भ में स्त्री जीवन की चुनौतियां

jv'n सपना, jv'n (प्रो) राज बाला

शोधार्थी, शोध निदेशक

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर राज.

**सारांश –** "टुकड़ा – टुकड़ा जीवन" आत्मकथा दलित स्त्री लेखिका कावेरी की निजी आत्मभिव्यक्ति का परिणाम है। यह महज एक आत्मकथा नहीं है बल्कि एक सामाजिक दस्तावेज है जो तमाम दलित स्त्रियों के जीवन की तमाम कठिनाइयों और आत्मसंघर्षों का जिक्र करती है। इसके माध्यम से एक स्त्री का समाज को देखने का नजरिया स्पष्ट होता है साथ ही समाज की उससे अपेक्षाएं और उसके प्रति उपेक्षा की भावना भी उजागर होती है। दलित स्त्री के परिपेक्ष्य से लिखी गई इस आत्मकथा में दलित जीवन के संघर्ष कम और एक स्त्री होने के द्वंद्व अधिक नजर आते है। बीच – बीच में दलित जीवन के अनुभवों की भी अभिव्यक्ति मिलती है। किसी भी समाज को बेहतर ढंग से समझने के लिए उसका साहित्य ही अधिक कारगर सिद्ध होता है। जो न केवल अपने निज को सामने रखता है अपितु उस समुदाय का प्रतिनिधित्व भी करता है जहां से व्यक्ति सम्बन्ध रखता है। भले ही सबके जीवन की दिशाएं पृथक हो लेकिन संघर्ष की तस्वीरें सबकी समान होती है। यह आत्मकथा इन्हीं बातों की अभिव्यक्ति है। अपनी आत्मकथा में कावेरी जी ने अपने जीवन की विभिन्न अवस्थाओं को जीवन के तमाम टुकड़ों के रूप में संबोधित कर क्रम से रखा है। भले ही इसमें दलित स्त्री की यातना कम दिखाई देती हो लेकिन स्त्री होने की पीड़ा बराबर बनी रहती है। लेखिका के आंचलिक परिवेश का पुट भी उनकी लेखनी पर स्पष्ट दिखाई देता है जिससे कि वाक्यों की सटीक बनावट में बाधा अवश्य आती है लेकिन आत्मकथा की संवेदना का जरा भी ह्रास नहीं होता जो कि एक सुयोग्य लेखक और पाठक की उपलब्धि है।

**मुख्य शब्द –** आत्मभिव्यक्ति,आत्मसंघर्ष, उपेक्षा, द्वंद्व, अस्पृश्य, वर्ण व्यवस्था, बालबुद्धि, पुरुषवर्चस्व, संत्रास, आरामतलब, समझौतेवादी, दब्बूपन, पतिव्रता।

देश का प्रत्येक व्यक्ति यहां सदियों से चली आ रही सामाजिक व्यवस्था यानी वर्ण व्यवस्था का हिस्सा है।जहां चारों वर्ण ऊंच – नीच के चार पायदान है जो ऊपर के वर्णों की उत्कृष्टता और सबसे अंतिम वर्ण की निकृष्टता का सूचक है। जिसमें शूद्र यानी दलित समुदाय आता है। इन दलितों में स्त्री दलितों

का वर्ग आज विमर्श का मुद्दा बना हुआ है। जिनके जीवन – जगत को जानने में शिक्षित वर्ग उत्साहित है। वर्ण व्यवस्था में जहां दलितों को अस्पृश्य कहकर घृणित बताया था आज वही दलित समाज अनेक जातियों में बंट गया है यहां भी ऊंच– नीच की भावना आ गई है और दलितों में भी निम्नतर जातियां अस्तित्व में आई है। इसमें भी जो वर्ग सबसे निम्न है वह है दलित स्त्रियों का। लेकिन वास्तव में स्त्री चाहे उच्च ब्राह्मण वर्ग की हो या निम्न दलित वर्ग की दोनों के जीवनानुभव समान रहे हैं जाति के बंध को किनारे कर देखें तो दोनों के जीवन संघर्षों में ज्यादा अंतर दिखाई नहीं देता। एक दलित स्त्री भी उन्हीं प्रश्नों के उत्तर दिन– रात खोजा करती है जो एक सवर्ण समुदाय की स्त्री जानना चाहती है।दोनों ही अपने अस्तित्व की तलाश करती है जो पितृसत्ता के आगे खुदको निर्बल पाती है।

दलित स्त्री या केवल स्त्री होने के अपने अनुभवों को कावेरी जी ने व्यक्त किया है जीवन के हर उस हिस्से को व्यक्त किया है जिससे उन्होंने कुछ पाया है।आत्मकथा लिखने से अक्सर लेखक बचते रहे है जिसके कारण आरंभिक दौर में आत्मकथाओं का क्षेत्र लगभग सूना रहा और स्त्री आत्मकथाएं भी न के बराबर रही लेकिन वर्तमान में स्त्रियों द्वारा यह निर्भीक कदम उठाया गया है और खुद को समाज के सामने रखा है। सच है कि आत्मकथा लिखना आसान नहीं होता इसपर कावेरी का कहना है – "लोगों की मांग है अपनी आत्मकथा लिखूं पीड़ा सहा हुआ मन, फिर उसे कुरेदा जाय तो क्या होगा एक बहुत बड़ा विस्फोट।"1 एक स्त्री होने के अनुभव पुरुषों से अलग होते है जिसमें समाज की भूमिका अधिक देखने को मिलती है। समाज का रवैया शुरुआत से ही स्त्रियों के पक्ष में नहीं रहा है और उनसे तथाकथित पुरुषवर्चस्व में ही पल्लवित होने की आकांक्षा की गई है। स्त्री जीवन की मुश्किलें जन्म के साथ ही उनके हिस्से में आ जाती है। और पुरुषों की दृष्टि में वे केवल दैहिक आकर्षण का केंद्र है ऐसे में उसकी उम्र,तकलीफें,पीड़ा, आदि की परवाह न करते हुए उसका शोषण करने से नहीं चूकते। अपने बचपन की एक घटना का जिक्र करते हुए लेखिका बताती हैं कि एक बार अपनी दादी के साथ गांव जा रही थी ट्रेन में भीड़ देख वह चिल्लाने लगी तो ऊपर की बर्थ पर बैठे एक व्यक्ति ने उन्हें अपनी जगह पर लिटा दिया और उनके पेट और जांघ पर हाथ फेरने लगा। बालबुद्धि में विवेक का जन्म होता है और वह तुरंत उस मनुष्य के भेस में मौजूद राक्षस से दूर हो जाती है। छोटी बच्चियों के साथ इस तरह की घटनाएं आए दिन अखबारों की मुख्य खबरें बनी रहती है। कम उम्र में ऐसे वीभत्स अनुभव उन्हें जीवन जीने योग्य स्थिति में नहीं छोड़ते साथ ही ऐसे अनुभवों के साथ विकसित होने वाली स्त्रियां असुरक्षा की भावना से ग्रस्त होकर अपने अस्तित्व को लगभग खो देती है। यह लेखिका के दौर की घटना है जो वर्तमान से केवल इतना अंतर रखती है कि आज छोटी लड़कियों और स्त्रियों के साथ होने वाले घिनौने कृत्यों में लगातार इजाफा हुआ है कमी नहीं आई। पुरुषों में शोषण की लालसा इस कदर विद्यमान रहती है कि स्त्रियों की खुद की रक्षा करने की हर कोशिश दम तोड़ देती है।इसी तरह की घटना का शिकार उनकी बेटी को भी होना पड़ा। उनके देवर ने उनकी बेटी का शोषण किया

जिसका दर्द वह सह नहीं सकी और दुनिया से विदा हो गई। लड़कियां अपने घर में भी सुरक्षित नहीं। परिवारजनों के बीच भी भयभीत रहती है। सवाल यह है कि फिर उसके लिए कौनसा स्थान सुरक्षित कहा जाय जहां वह खुल कर बिना किसी डर के जी सके और जहां उसे अपने ढके हुए बदन को और ना ढकना पड़े?

एक स्त्री होने का संत्रास केवल उसके शारीरिक शोषण तक सीमित नहीं है अपितु उसके मानसिक शोषण से भी जुड़ा हुआ है।वे लिखती है – "मेरे पति महोदय गांव में रहकर निपढ़ – गंवार जैसा रहते और व्यवहार भी उसी तरह करते। बेवजह उनकी मां और बहन मुझे डांटती रहती और वे चुपचाप सुनते रहते। गुस्सा में सासू मां गली – गलौज भी मेरे भैया और पिताजी को देती।"2 हमारे समाज में लड़की से ससुराल में गलती होने पर उसके परिवार को बीच में लाने की परंपरा सदियों से रही है जो आज भी बरकरार है ऐसे में लड़की को बचपन से कायदे सिखाए जाते है ताकि वह अपने साथ परिवार को उनके क्रोध का शिकार होने से बचा सके। इसपर लेखिका का वक्तव्य है "पिता और भाई ने समझाया था – लड़की को सहनशील होना चाहिए।लड़की की डोली ससुराल जाती है और अर्थी वहां से निकलती है"3 "जाने – अनजाने गलती होती है। उसके लिए पुरुष दोषी नहीं,उनके अंदर पश्चाताप डेरा नहीं डालता,भयंकर अपराध के बाद वे निश्चिंत और बेगुनाह बने रहते हैं। वहीं अपराध नारी से हो जाय तो उनका जीवन यातनाओं से भर जाता है।"4 आरम्भ से ही स्त्री पितृसत्ता की छत्रछाया में पल्लवित होते हुए खुद को आरामतलब रखने की इच्छा के चलते हर अत्याचार को सहन करती रही इससे हुआ ये कि धीरे – धीरे वह समझौतेवादी बनती गई और अपने लिए आवाज उठाने के स्थान पर उसमें दब्बूपन की प्रवृति गहराती गई। कावेरी लिखती हैं – "मैने अपने – आप से समझौता करना सीख लिया था।"5 विवाह से पूर्व पिता– भाई और विवाह के पश्चात पति – पुत्र ही स्त्री का कर्ताधर्ता रहा जिनकी इच्छा के विरुद्ध जाने का साहस वह जुटा नहीं पाई। सोने – चांदी के सुंदर आभूषणों तथा लज्जाशील आचरण की प्रतिमूर्ति व आदर्श स्त्री बनने की होड़ में उसने इसके अतिरिक्त दुनिया की कल्पना ही नहीं की। उसकी देह पर लदा एक – एक आभूषण जो उसकी शोभा बढ़ा रहे थे असल में वे उसपर लगाए गए बंधन थे जिसे पुरुष ने बड़े जतन से गढ़ा था।

वर्तमान में शिक्षित पुरुष समाज द्वारा स्त्रियों को अपमानित करने के लिए उन्हें मारने पीटने के स्थान पर घृणित कथनों का सहारा लिया जाता है। अनेक दकियानूसी बातों से उसके चरित्र को मैला साबित करने के प्रयास में उसका मानसिक शोषण होता रहा है। इसी तरह के वाक्य कावेरी अपने पति द्वारा सुनती है।जब शिक्षिका प्रशिक्षण के इंटरव्यू के लिए उन्हें गया जाना था पर उनके पति उनके साथ नहीं गए वह अपने जीजा के साथ वहां गई। इसपर पति ने सवालों की बौछार कर दी – "तुम जीजा के साथ क्यों गई? गई तो उसकी बहन के घर में क्यों ठहरी? रात में साथ कौन सोया?"6 ऐसे सवाल उस स्त्री के लिए किसी घातक प्रहार से कम नहीं जो हर वक्त अपने पति के लिए ईमानदार बनी रही । यह

समाज स्त्रियों को अपने पति के अतिरिक्त किसी भी पुरुष से दोस्ती तक का रिश्ता रखने की इजाजत नहीं देता। क्योंकि उन्हें पतिव्रता होने के नियम का पालन करना होता है। नियम पुरुषों के लिए भी हैं पर उनमें लचीलापन है। उनके लिए ये नियम इतने कठोर नहीं जितने स्त्रियों के लिए। "पर नारी,पर पुरुष से संबंध उचित नहीं। यह नियम नारियों के लिए है। पुरुष तो छूटा सांड है। कहीं मुंह मार सकता है।यदि प्रताड़ना से पीड़ित कोई नारी,पर पुरुष का साथ चाहती है तो उसको जीवन से बहिष्कार है"7।"मुझे कठोर यातनाओं से नहीं स्वीट प्रयोजन से प्रताड़ित किया गया। मैंने खुदकुशी की जगह आत्मसंयम से काम किया"8।

आज स्त्री पुरुष की छत्रछाया में अपना जीवन गुजारने के स्थान पर उसके द्वारा किए जाने वाले प्रयासों में उनके सहयोग की अपेक्षा रखती है।कावेरी ने अपने पति को अपना साथी बनाना चाहा लेकिन सफलता नहीं मिली "अधिक ऐशो आराम का सपना मैने कभी देखा नहीं।एक अच्छे दोस्त के साथ उड़ान भरने की मात्र कल्पना पालती रही। अधिक गहराई की परिणति वही देह का मालिक बनाना।"9 इसी के साथ उनके छोटे से प्रयासों के लिए भी उन्हें कोटि – कोटि धन्यवाद देना नहीं भूलती "मैं अपने पति के प्रति एहसानमंद हूँ जिन्होंने मेरे लिए नौकरी का प्रयास किया।"10 "पति के रूप में सुरक्षा कवच तो नहीं मिला, किंतु समाज में स्थान तो मिला।लेखिका के रूप में मुझे लोग याद करेंगे तो पति के बदौलत। यहां तक पहुंचने और पहुंचाने में पति का हाथ रहा।"11 समाज द्वारा अक्सर स्त्रियों को उनकी राह से भटकाने के लिए तरह – तरह के प्रयोजन किए जाते रहे हैं। लेकिन शिक्षा के माध्यम से उसने खुद को इतना सक्षम बनाया है कि वह अपने दम पर अपने जीवन की राह तय कर सके।

**निष्कर्ष –** निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि जीवन की तमाम कठिनाइयों को सहन करने के बावजूद भी एक स्त्री खुद को टूटने नहीं देती। अपने आप को कमजोर सिद्ध नहीं होने देती ऐसे में अपने लिए अवसरों की तलाश करते करते आज अपने हाथों से अवसर बना रही है। और अपने साथ की स्त्रियों के लिए भी रास्ता बना रही है। इसके लिए उसने केवल शिक्षा को ही अपना सच्चा साथी माना जिसने उनका परिचय उनके मौलिक अधिकारों से कराया। स्त्री होने के अपने महत्व को जानकर उन्होंने पुरुषों से बराबरी करने का साहस जुटाया और खुद को उनसे बेहतर साबित करने के लिए परिश्रम किया जिसकी बदौलत स्त्रियां साहित्य में नजर आ रही हैं और एक विशाल स्त्री साहित्य के निर्माण में योगदान दे रही हैं जिसके द्वारा शिक्षित समाज स्त्री जीवन की कठिनाइयों को जान और समझ रहा है साथ ही उनके प्रश्नों के उत्तर खोजने में उनका सहयोग कर रहा है। अब तक स्त्री केवल दूसरी स्त्री का आदर्श थी लेकिन अब वह औरों की प्रेरणा का स्त्रोत है।

**संदर्भ सूची :–**

1.टुकड़ा – टुकड़ा जीवन (आत्मकथा 2017 कावेरी) स्वराज प्रकाशन, पृष्ठ 7

2. वही, पृष्ठ 20

3. वही, पृष्ठ 45

4. वही, पृष्ठ 34

5. वही, पृष्ठ 33

6. वही, पृष्ठ 23

7. वही, पृष्ठ 73

8. वही, पृष्ठ 46

9. वही, पृष्ठ 47

10. वही, पृष्ठ 28

11. वही, पृष्ठ 129